IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

बालिका सशक्तिकरण में पारिवारिक वातावरण की भूमिका : एक विमर्श

रोहित कुमार (S.R.F.)[1] and डॉ. शोभिताअग्रवाल[2]

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र, Dayanand Women's Training College, Kanpur, Uttar Pradesh, India[1]

पूर्व प्राचार्या, शिक्षाशास्त्र, Dayanand Women's Training College, Kanpur, Uttar Pradesh, India[2]

सारांश: महिला अपने आप में संपूर्ण सृष्टि हैं। महिला के अंदर सृजन, पोषण, परिवर्तन आदि शक्तियां निहित हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में जहां समाज पितृसत्तात्मक हैं। इन परिस्थितियों में एक बालिका के लिए उसके सामाजिक, शैक्षिक, मानसिक, बौद्धिक,भावात्मक मूल्यों में भेदभाव पुरुष संवर्ग द्वारा ही नहीं किया जाता हैं। परिवार से ही शुरू हुए इस लैंगिक भेदभाव से विवश आधी आबादी के जीवन स्तर को इस शोचनीय अवस्था में ला खड़ा किया हैं कि वे स्वयं में निहित अपनी क्षमताओं का उपयोग भी अपने जीवन के उत्थान के लिए न कर सके। इस संदर्भ में विवेकानन्द ने उचित ही कहा हैंकि-"स्त्रियों की दशा में सुधार ना होने तक विश्व का कल्याण उसी प्रकार असंभवहैंजिस प्रकार पक्षी का एक पंख से उड़ना।"बालिका सशक्तिकरण में सर्वप्रथम परिवार की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण हैं। बालिकाओं के विकास हेतु परिवार व अच्छे पारिवारिक पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है परिवार सौहार्दपूर्ण पारिवारिक पर्यावरण ही बालिकाओं को बेहतर जीवन की ओर अग्रसर कर सकता है। परिवार में माता-पिता इस प्रकार का पर्यावरण बनाते है तथा बनाये रखते हैं जो उनके बालिकाओं के विकास में सहायक हो तथा उनके बालिकाओं का सर्वांगीण व संतुलित विकास कर सके। सौहार्दपूर्ण पारिवारिक वातावरण बालिका को बेहतर जीवन की ओर अग्रसर करता हैं।

संकेत शब्द: पारिवारिक वातावरण, पितृसत्तात्मकसमाज, भावात्मक मूल्य, बालिका सशक्तिकरण ।

प्रस्तावना :

बालक की शिक्षा जन्म होने के बाद से ही प्रारम्भ हो जाती है। घर एवं परिवार मानव समाज के विकास की सबसे प्राचीनतम एवं आधारभूत इकाई हैं। परिवार एक ऐसा समूह है जिसमें कई व्यक्ति एक साथ रहते है तथा सब एक दूसरे से माता-पिता, पति-पत्नी,भाई-बहिन अथवा किसी रक्त सम्बंध से सम्बन्धित होते है, और इनके रहन-सहन, संस्कृति,विचार, आचरण, आदि से परिवार बनता है, जो कि पारिवारिक पर्यावरण का एक हिस्सा है। प्रकृति ने अपने पुत्र और पुत्रियों को समान रुप से सृजित किया है किन्तु यह मानवीय समाज की विडंबना ही है कि स्त्रियाँ सामाजिक धरातल पर न केवल भेद-भाव की शिकार हो रही है अपितु उन्हें द्वितीय

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

श्रेणी के नागरिक का दर्जा भी प्राप्त रहा है। विद्यालय में प्रवेश के पूर्व बालकों को परिवार में ही रहकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार परिवार अनियंत्रित एवं सक्रिय शिक्षा का साधन हैं। जन्म से ही प्रत्येक बालक को एक पारिवारिक परिवेश प्राप्त होता है, यही से उसकी शिक्षा की शुरूआत होती है. इसलिये परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है और पारिवारिक वातावरण को बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला।अतः कुटुम्ब शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ स्थान है एवं बालक का प्रधान विद्यालय हैं। आज के 21वीं शताब्दी के तथाकथित सभ्य समाज में भी यह भेदभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। इस लैंगिक भेदभाव ने विवश की आधी आबादी अर्थात स्त्रियोंके जीवन स्तर को इस शोचनीय अवस्था तक ला खड़ा किया कि वे स्वयं में निहित क्षमताओं का उपयोग भी अपने जीवन के उत्थान के लिए न कर सकी। समाज के लिए स्त्री का स्वस्थ, शिक्षित, बुद्धिमान,खुशहाल, समझदार, व्यवहार कुशलहोना अत्यंत जरूरी है और वह शिक्षा से ही सम्भव है। जब स्त्री की स्वयं की स्थिति सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक आदि दृष्टिकोण से निम्न होगी। तो वह परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे पायेंगी, यह प्रश्न अत्यन्त चिन्तनशील है क्योंकि एक तो स्त्रियाँ स्वयं राष्ट्र की आधी से कम जनसंख्या है तथा दूसरा बच्चे, युवा, प्रौढ़ और वृद्धजन उन पर अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं के लिए निर्भर रहते हैं।

परिवार:

घर वह होता है जहाँ भावनाएँ बसती हो, ये भावनाएँ जहाँ परिवार के सभी सदस्य स्नेहपूर्वक रहते है वहाँ होती है। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है, इसलिये परिवार को समस्त मानवीय समूहों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। परिवार से ही समाज का निर्माण होता है, परिवार का समाज में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार सामाजिक संगठन की आधारभूत इकाई हैं।मेकाइवर एवं पेज के अनुसार- परिवार पर्याप्त यौन संबंध परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जनन एवं लालन-पालन की व्यवस्था करता है।"मैलिनोस्की के अनुसार "परिवारही एक ऐसा समूह है जिसे मनुष्य पशु अवस्था से अपने साथ लाया है।"बगेस एवं लॉक के अनुसार-"परिवार व्यक्तियों का ऐसा समूह है जो विवाह, रक्त अथवा गोद के सम्बन्धों पर आधारित होता है यह समूह एक गृहस्थी का निर्माण करता है जिसके अंतर्गत परिवार के सदस्यगण, पति, पत्नी, माता, पिता, भाई, बहन की विभिन्न भूमिकाएं निभाते हुए एक दूसरे से अंतः क्रिया करते हैं, एक दूसरे से भावों और विचारों का आदान प्रदान करते हैं और इस प्रकार परिवार के लिए एक संस्कृति का निर्माण करते हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

परिवार के प्रकार:

मानव समाज के विकास के साथ-साथ विश्व पटल पर परिवारों का अध्ययन बताता है कि प्रत्येक स्थान की भौगोलिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के परिवार व्यवस्था को जन्म दिया हैं। परिवार का वर्गीकरण अनेक आधारों पर लिया जाता है। विभिन्न प्रकार के परिवारों का वर्गीकरण इस प्रकार है-

- **सत्ता विवाह के आधार पर-** (i) पितृसत्तात्मक (ii) मातृसत्तात्मक
- **आकार / रचना विवाह के आधार पर –**(i) एकाकी(एकल) परिवार (ii) संयुक्त परिवार

परिवार के उपरोक्त प्रकारों में से वर्तमान समय में हमारे समाज में दो रूप दृष्टिगोचर होते हैं-

(2) पितृसत्तात्मक परिवार (ii) मातृसत्तात्मक परिवार

पारिवारिक वातावरण:

बालक जिस प्रकार के पारिवारिक वातावरण में रहता है उस वातावरण का प्रभाव उस पर पड़ता है, जिस परिवार में मैत्रीपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण होता है, वहाँ बालक का समुचित विकास होता है। इसके विपरीत जिस परिवार का वातावरण सौहार्दपूर्ण नहीं होता है वहाँ बालकों का समुचित विकास नहीं हो पाता है, और वहाँ बालकों के अनेक चरों जैसेस्वभाव, प्रेरणा,बुद्धि, शैक्षिक रुचि, शैक्षिक उपलब्धि, जीवन शैली, संवेग, सामाजिक दक्षता, जीवन मूल्य, स्वपोषण, शैक्षिक महत्वाकाँक्षायें, समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य, सीखना, सामाजिक परिपक्वता, सामाजिक प्रतिष्ठा, सामाजिक कौशल व्यक्तित्व इत्यादि को प्रभावित करते हैं, जो कि बालकों के सर्वांगीण विकास से सम्बन्ध रखते हैं।

पारिवारिक वातावरण की बालक के विकासमें भूमिका:

परिवार बच्चे की सर्वप्रथम संस्था है जहाँ से वह अपने जीवन की यात्रा आरम्भ करता है और यहीं से उसकी शिक्षा का आरम्भ होता है। मैकाइवर एवं पेज ने भी कहा है – 'बच्चा नागरिकता का पहला पाठ माँ के चुम्बन एवं पिता के आलिंगन से सीखता है परिवार ही उसका प्रथम पाठशाला है।" (गुप्ता एवं शर्मा, 2003 से उद्धृत) प्रत्येक परिवार की अपनी पर्यावरणीय वंशानुक्रम, सामाजिक.भावात्मक, आर्थिक, शैक्षिक व संगठनात्मक स्थिति आदि होती है। परिवार की ये स्थितियों ही बालक के शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, बौद्धिक विकास, शैक्षिक विकास आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बालक जैसे-जैसे

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

बड़ा होता है वैसे-वैसे परिवार द्वारा उसमें विभिन्न मानवीय गुणों का विकास होता है, जो भविष्य में उसे एक सुयोग्य एवं चरित्रवान नागरिक बनाने में सहायक होते हैं।

परिवार से ही बालक में सामाजिक दक्षता के गुणों का विकास होना प्रारम्भ हो जाता है, जो बालक को समाज के एक सफल सदस्य बनाने में सहायक होते हैं, परन्तु जब परिवार अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु बालक पर पढ़ाई का बोझ डाल देते हैं और उनकी स्वतंत्रता समाप्त करने लगते है. बालक को सामाजिक गतिविधियों में लिप्त होने से रोकने लगते है तो ऐसी परिस्थितियों में उनमें सामाजिक दक्षता के गुणों का विकास नहीं हो पाता है तथा वे सामाजिक गतिविधियों को समय से धारण नहीं कर पाते और सामाजिक जिम्मेदारियों में भी अपनी सक्रिय भूमिका नहीं निभा पाते हैं। जिससे उनका पर्याप्त सामाजिक विकास नहीं हो पाता है और आगे चलकर वे स्वयं को सामाजिक जीवन में सुलभता से समायोजित नहीं कर पाते हैं।

प्रतिस्पर्धा के इस युग में परिवार अपने बच्चों को सबसे आगे देखना चाहते हैं। इस युग में बच्चों के लिये अपना मार्ग सुनिश्चित करना आसान नहीं है। बदलते परिवेश में पुराने पारम्परिक विषयों और पाठ्यक्रम की तुलना में नये युग में नये विषय और पाठ्यक्रम अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। बीते कुछ दिनों में शिक्षा में नये-नये विषय आ रहे हैं, नई-नई खोजें हो रही हैं शिक्षा का कई रूपों में उदय हुआ है, जिन्हें देखकर बच्चे का भ्रमित होना स्वाभाविक है ऐसे में परिवार की भूमिका अत्यधिक हो जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
2. आज की शिक्षा व्यवस्था का बालिकाओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु द्वितीयक तथ्यों का उपयोग किया गया हैं। द्वितीयक तथ्यों के संकलन हेतु पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, शोध जर्नल, इंटरनेट आदि का प्रयोग किया गया हैं। शोध की पद्धति मूलत: विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया हैं।

निष्कर्ष:

शिक्षा के आधार पर महिला में दक्षता, कौशल, ज्ञान एवं क्षमताओं का विकास होता है। शिक्षित महिला न केवल स्वयं लाभान्वित होती है, वरन उससे भावी पीढ़ी भी लाभान्वित होती है। शिक्षा किसी भी प्रकार के

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

कौशल की प्राप्ति एवं विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के विकास के लिए पूर्णतया आवश्यक है। महिला की शिक्षा से उसका शोषण रोकने में सहायता मिलेगी। निर्णय लेने की क्षमता सशक्तिकरण का एक बड़ा मानक है। शिक्षा का निर्णय लेने की क्षमता से धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है। न्यून शैक्षिक स्तर का सीधा प्रभाव है इस मानव पूंजी (महिला) का निम्न स्तरीय विकास, कुशलता का निम्न स्तर तथा श्रम बाजार में न्यून भागीदारी। महिलाओं की वास्तविक स्थिति से व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है। शिक्षा जीवन के दरवाजे की कुंजी है जिसका लक्ष्य ज्ञानरूपी प्रकाश को फैलाना तथा अज्ञानताके अंधेरे को दूर करना है। मकोल व अन्य के अनुसार 'किसी भी समाज या राष्ट्र की प्रगति के लिए महिला शिक्षा को विशेष महत्व है। किसी भी शिक्षित समाज की वास्तविक स्थिति जानने का तरीका है, कि हम यह जानने का प्रयास करे कि समाज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति कैसी है, उनको क्या-क्या अधिकार प्राप्त हुए हैं और उनकी मूलभूत संसाधनों तक कितनी पहुँच है तथा राजनीतिक व सामाजिक निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में उनकी कितनी सहभागिता है? देखा जाय तो महिलाओं की शिक्षा विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है जिसने महिलाओं का स्तर और उनकी समाज में भूमिका को उठाने में सहायता की है।"

लैंगिक भेदभाव, पारिवारिक परम्पराएँ, पर्दाप्रथा, बाल विवाह, निर्धनता, सामाजिक, आर्थिक पहलू, घर से विद्यालय की दूरी आदि महिला शिक्षा में प्रमुख बाधाएँ है। केन्द्र और राज्य सरकारें विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से बिना किसी भेदभाव सभी महिलाओं को शिक्षा की धारा में शामिल करने के लिए निरन्तर प्रयास कर रही है। जैसे-जैसे महिलाओं का शिक्षा की ओर रूझान बढ़ा है अर्थात् वे शिक्षित हुई है, वैसे-वैसे ये सभी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में भी सुदृढ हुई है तथा आत्मनिर्भर बनी है। अतः महिला और पुरुष दोनों रथ के पहियों के समान है। यदि एक निर्बल और घटिया हुआ तो समाज का रथ निर्विघ्न आगे नहीं बढ़ सकता है। स्पष्ट है कि शिक्षित नारी का उभरता हुआ कदम क्या होगा. समय ही बतायेगा।

संदर्भ सूची:

[1]. सुलेमान, मोहम्मद.मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, दिल्ली, मोतीलालबनारसीदास, 2005 ।

[2]. गुप्ता, एस.पी.अनुसंधान संदर्शिका, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, 2011 ।

[3]. चैधरी,मंजू& कुमार.सुजीत.(2016)गृहवातावरण के सामाजिक एवं संवेगात्मक संदर्भ में अधिगम आदत के सम्बन्ध का अध्ययन.Published inInternational Research Journal of

Management Science & Technology; ISSN: 2250 – 1959 (Online); Volume: 7; Issue: 2; Page No. 84-92.

[4]. भारतीय, धर्मेन्द्र कुमार (2022). *महिला सशक्तिकरणऔर शिक्षा.* शिक्षा शोध मंथन, 8(1),162-165.

[5]. श्रीवास, डॉ0 सन्दीप कुमार एवं गुप्ता, डॉ0 मोनिका (2022). *परिवारिक वातावरण : प्रत्यय, आयाम एवं बालक के विकास में भूमिका.* शिक्षा शोध मंथन, 8(1),235-243.

[6]. www.eric.com

[7]. www.googlescholar.com

[8]. www.shodhganga.com

BIOGRAPHY

Rohit Kumar M.Ed., M.Sc. (Physics), M.A. (Sociology) is a Research Scholar Fellow (UGC) in Education. I am started career as an Assistant Professor at Oxford Model Institute of Advanced Studies Kanpur, U.P. (INDIA) since 2017 to2019 then, Join Ph.D. Regular course in C.S.J.M. University, Kanpur (U.P.) I have presented 5 Research Papers in National Seminar and 2 Research Papers published in Peer-Reviewed Journal.